International Journal of Geology, Agriculture and Environmental Sciences Volume – 7 Issue – 1 January-June 2019
Website: www.woarjournals.org/IJGAES *ISSN: 2348-0254*

अजमेर शहर की नगरीय आकारिकी का विश्लेषण

रामफूल यादव, सहायक आचार्य, भूगोल विभाग, राजकीय महाविद्यालय, अराई, अजमेर

शोध सारांश :
अजमेर शहर राजस्थान के लगभग मध्य में अपनी विशिष्ट महता रखता है। अजमेर शहर का विशेष महत्व यहां की नगरीय आकारिकी के कारण ओर भी बढ़ जाता है। अजमेर शहर का लगभग 75752.56 हैक्टेयर नगरीकृत क्षेत्र है, जिसमें से 8575.29 हैक्टेयर भूमि विकसित क्षेत्र तथा 353.75 हैक्टेयर केन्द्रीय आरक्षित पुलिस बल, रक्षा विभाग व राजकीय आरक्षित भूमि के अन्तर्गत आती है व शेष भूमि कृषि, रिक्त भूमि, वन भूमि, पहाड़ी क्षेत्र एवं जलाशय के अन्तर्गत शामिल की जाती है।
आनासागर, फॉयसागर, पालबीचला, खानपुरा आदि जलाशयों का 375.03 हैक्टेयर क्षेत्र है। कुल विकसित क्षेत्र 8575.29 हैक्टेयर है, जिसमें से 5922.07 हैक्टेयर का आवासीय उपयोग हो रहा है, जो कि विकसित क्षेत्र का लगभग 69.06 प्रतिशत है। व्यावसायिक गतिविधियों में 282.01 हैक्टेयर क्षेत्र है जो कि विकसित क्षेत्र का 3.29 प्रतिशत है। यह व्यावसायिक क्षेत्र मुख्यतः पुराने शहर में खाईलेण्ड़ मार्केट स्टेशन, कचहरी रोड़ व रामगंज में स्थित है। ब्यावर रोड पर कृषि उपज मण्ड़ी, बकरा मण्ड़ी आदि प्रमुख व्यावसायिक केन्द्र है। औद्योगिक उपयोग में 1094.38 हैक्टेयर भूमि है, जो कि विकसित क्षेत्र का 12.76 प्रतिशत है, जिसमें रेलवे के दो वर्कशाप भी शामिल है। अजमेर शहर औद्योगिक क्षेत्र में काफी पिछड़ा हुआ है। राजकीय उपयोग में 95.92 हैक्टेयर भूमि है जो यह दर्शाता है कि नये कार्यालयों का विकास बहुत कम हुआ है। सार्वजनिक एवं अर्द्ध–सार्वजनिक के अन्तर्गत 1073.55 हैक्टेयर है, जो विकसित क्षेत्र का 12.52 प्रतिशत है। मनोरंजन प्रयोजन में भूमि 76.42 हैक्टेयर है, जिससे यह स्पष्ट होता है कि शहर में उद्यान एवं खुले स्थलों की नितान्त कमी है। परिसंचरण के अन्तर्गत 30.94 हैक्टेयर भूमि है। यह मुख्तयाः जयपुर–ब्यावर बाईपास के कारण है।
संकेतांक : *नगरीय, आकारिकी, विकसित क्षेत्र, वन भूमि, पहाड़ी क्षेत्र, जलाशय, आवासीय, औद्योगिक क्षेत्र, परिसंचरण।*

परिचय :
जनसंख्या वितरण एवं घनत्व दोनों परस्पर सम्बन्धित है लेकिन भिन्न सकंल्पनाऐं है जनसंख्या वितरण एवं घनत्व अध्ययन कि पृष्ठ भूमि से पता चलता है कि जनसंख्या भूगोल के एक स्वतंत्र शाखा के रूप में विकसित होने से पूर्व ही जनसंख्या वितरण एवं घनत्व का आपसी सम्बंध किसी भी क्षेत्र की जनसंख्या की जानकारी प्राप्त करने के लिए जनसंख्या वितरण एवं घनत्व का विश्लेषण मुख्य आधार होता है। जनसंख्या वितरण प्रारूप न केवल मनुष्य के किसी क्षेत्र विशेष में बचाव सम्बधिंत अभिरूचि एवं विरूचि का द्योतक है। अपितु क्षेत्र में कार्यरत भौगोलिक कारकों के संश्लेषण का स्पष्ट प्रदर्शक भी होता है। अजमेर शहर की नगरीय आकारिकी का अध्ययन करने में शहर के जनसंख्या घनत्व का विश्लेषण आवश्यक है–

सारणी 1 : अजमेर शहर में जनसंख्या घनत्व (वर्ष 1991 से 2011)

वर्ष	क्षेत्रफल (वर्ग किमी. में)	जनसंख्या	जनसंख्या घनत्व (प्रति व्यक्ति वर्ग किमी.)
1991	55.76	402700	7222
2001	55.76	485575	8708
2011	55.76	577838	10363

स्त्रोत : जनगणना प्रतिवेदन, अजमेर, 1991, 2001 एवं 2011।

वर्ष 1991 में अजमेर शहर की जनसंख्या 402700 थी, जिसका जनसंख्या घनत्व 7222 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर था, जो वर्ष 2001 में बढ़कर 8708 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर हो गया है।

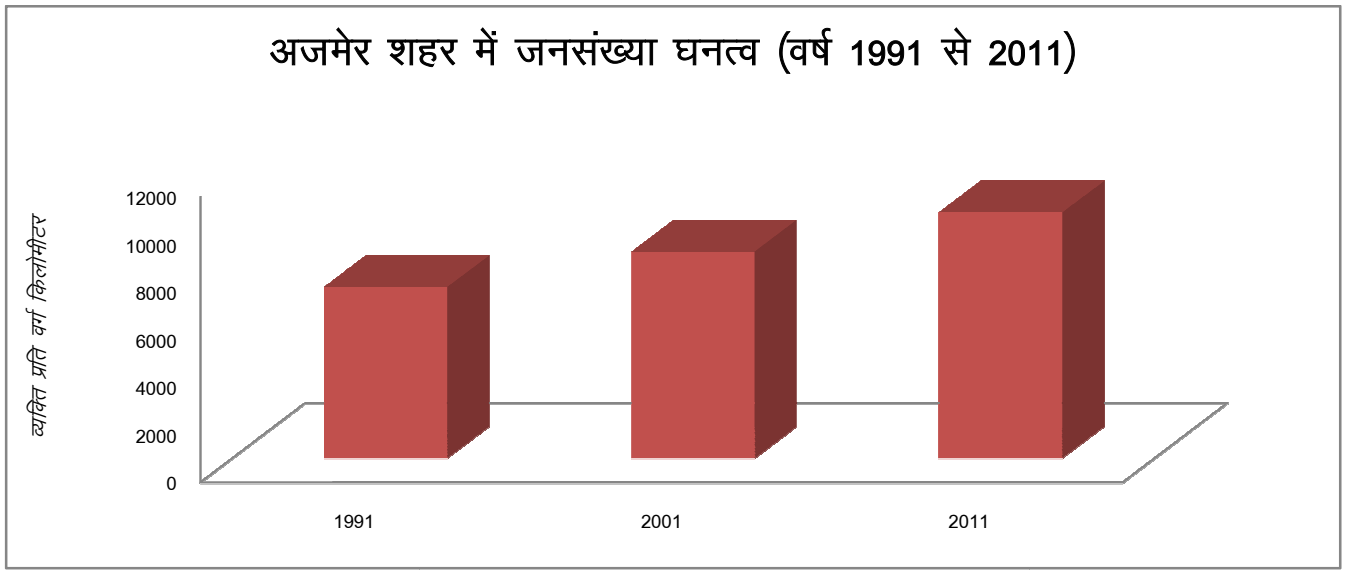

आरेख 1 : अजमेर शहर में जनसंख्या घनत्व

इसी प्रकार प्रकार वर्ष 2011 में शहर का जनसंख्या घनत्व बढ़कर 10363 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर दर्ज किया गया है। अजमेर शहर में बढ़ता जनसंख्या घनत्व स्पष्ट करता है कि अजमेर शहर की नगरीय आकारिकी में बदलाव हो रहा है।

प्रकार्यात्मक वर्गीकरण

सम्पूर्ण विश्व के नगरीकरण का एक महत्वपूर्ण पहलू नगर प्रणाली के अन्तर्गत बड़े तथा छोटे शहरों के विकास का असमान प्रतिरूप विद्यमान होता है। प्रत्येक नगर प्रणाली में कुछ बड़े नगर तथा अनेक छोटे कस्बे भी शामिल होते हैं। बड़े नगरों में कुल नगरीय जनसंख्या का एक बड़ा भाग निवास करता है, जबकि संख्या में अधिक होने के बाद भी छोटे नगरों द्वारा कुल शहरी जनसंख्या में अपेक्षाकृत अल्प भागीदारी निभायी जाती है।

10 लाख से अधिक की जनसंख्या वाले नगर भारतीय नगरीय प्रणाली के सबसे ऊपरी पायदान पर होते हैं। इन शहरों में कुल शहरी जनसंख्या का एक तिहाई से भी अधिक भाग रहता है। इनके बाद 1 लाख तक की जनसंख्या वाले प्रथम श्रेणी के नगर तथा मध्यम नगर (द्वितीयक एवं तृतीयक नगर) आते हैं। इन नगरों में एक चौथाई से अधिक शहरी जनसंख्या निवास करती है। चतुर्थ एवं पंचम श्रेणी के नगर, जिनकी संख्या शहरों की संख्या का लगभग 50 प्रतिशत है।

प्रत्येक प्रमुख कार्य का अपना अलग से पदानुक्रम होता है। उदाहरण के लिये प्रशासन की दृष्टि से सबसे निचले स्तर पर राजस्व ग्राम होता है। इसके बाद प्रचायत संघ, विकास खण्ड़, तहसील, जिला का स्थान आता है, जहां राज्यपाल, राज्य विधायिका, उच्च न्यायालय, सचिवालय इत्यादि होते हैं। इसी प्रकार अजमेर शहर में भी एक नगरीय प्रदानुक्रम भी विद्यमान है, जिसके अन्तर्गत प्रशासनिक एवं विकासीय गतिविधियों का संचालन किया जाता है, जहां निम्न स्तरीय कार्य तथा उच्च स्तरीय कार्यों हेतु अलग–अलग संस्थाओं की स्थापना की गई है।

अपनी केन्द्रीय अथवा नोडीय स्थान की भूमिका के अतिरिक्त अनेक शहर और नगर विशेषीकृत सेवाओं का निष्पादन करते हैं। कुछ शहरों और नगरों को कुछ निश्चित प्रकार्यों में विशिष्टता प्राप्त होती है और उन्हें कुछ विशिष्ट क्रियाओं, उत्पादनों अथवा सेवाओं के लिए जाना जाता है, फिर भी प्रत्येक शहर अनेक प्रकार्य करता है।

अजमेर शहर में प्रकार्यात्मक आधार पर नगर को वर्गीकृत करने वाले कारकों में निम्न को शामिल किया जाता है–

प्रशासन शहर और नगर :

उच्चतर क्रम के प्रशासनिक मुख्यलयों वाले शहरों को प्रशासन नगर कहते हैं। अजमेर शहर को भी इस श्रेणी में शामिल किया जाता है। अजमेर शहर में जिला मुख्यालय एक प्रशासनिक इकाई के रूप में कार्यरत है।

औद्योगिक नगर :

अजमेर जिले में विभिन्न प्रकार के खनिजों का भण्ड़ार है, साथ ही इन खनिजों का उत्पादन भी किया जाता है। अजमेर शहर के निकट किशनगढ़ में मारबल के उद्योग स्थापित किये गये हैं, जो अजमेर नगर को औद्योगिक नगर में शामिल करते हैं। नगर के विकास का प्रमुख अभिप्रेरक बल उद्योगों का विकसित होना ही रहा है।

परिवहन नगर :

व्यापार और वाणिज्य में विशिष्टता प्राप्त शहरों एवं नगरों को इस श्रेणी के अन्तर्गत शामिल किया जाता है। अजमेर शहर की अवस्थिति भी व्यापार एवं वाणिज्य की दृष्टि से उत्तम है, जहां से व्यापारिक एवं वाणिज्यिक सेवाओं का परिवहन किया जाता है।

गैरिसन (छावनी) नगर :

इस भाँति के नगरों की उत्पत्ति गैरिसन नगरों के रूप में हुई है। अजमेर शहर भी अंग्रेजी साम्राज्य के समय एक छावनी के रूप में विकसित हुआ था।

धार्मिक और सांस्कृतिक नगर :

अजमेर शहर अपने धार्मिक एवं सांस्कृतिक महत्व के कारण भी जाना जाता है। शहर में विश्व प्रसिद्ध ख्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती दरगाह धार्मिक विरासत के रूप में विकसित हुई है। वहीं दूसरी ओर ढ़ाई दिन का झोपड़ा शहर में सांस्कृतिक विरासत का अंग है, जो अजमेर शहर को विश्व स्तर पर पहचान दिलाते हैं।

शैक्षिक नगर :

मुख्य परिसर नगरों में से कुछ नगर शिक्षा केन्द्रों के रूप में विकसित हुए हैं, जिनमें अजमेर शहर को भी गिना जाता है। अजमेर को राजस्थान की शिक्षा नगरी के रूप में भी जाना जाता है। यहां के शिक्षण संस्थानों में माध्यमिक शिक्षा बोर्ड़, आर.पी.एस.सी. सहित विद्यालय स्तर एवं उच्च स्तर के शिक्षण संस्थानों की विद्यमानता भी शहर को इस श्रेणी में शामिल करती है।

पर्यटन नगर :

अजमेर शहर को राज्य के प्रमुख पर्यटन स्थलों में से एक उच्च स्तरीय पर्यटन स्थल के रूप में जाना जाता है। शहर के ऐतिहासिक स्थल, सांस्कृतिक विरासत, झीलें आदि अन्तर्राष्ट्रीय पर्यटन को बढ़ावा देती हैं और यही कारण है कि शहर को पर्यटन नगर की श्रेणी में भी शामिल किया जाता है।

विशेषीकृत नगर भी महानगर बनने पर बहुप्रकार्यात्मक बन जाते हैं, जिनमें उद्योग व्यवसाय, प्रशासन, परिवहन इत्यादि अति महत्वपूर्ण हो जाते हैं।

स्मार्ट सिटी मिशन :

स्मार्ट सिटी मिशन का उद्देश्य शहरों को बढ़ावा देना है जो आधारभूत सुविधा, सफाई तथा सतत् पर्यावरण और अपने नागरिकों को बेहतर जीवन प्रदान करते हैं। स्मार्ट शहरों की एक विशेषता आधारभूत सुविधाओं और सेवाओं के लिए स्मार्ट संसाधनों को लागू करना है। जिससे क्षेत्रों को प्राकृतिक आपदाओं के कम जोखिम वाले क्षेत्रों के रूप में बनाया जा सके, साथ ही साथ कम संसाधनों का उपयोग तथा सस्ती सुविधाऐं उपलब्ध कराई जा सकें। इस योजना में सतत् तथा समग्र विकास पर ध्यान केन्द्रित किया गया है। इस योजना का उद्देश्य एक ऐसे सघन क्षेत्र पर ध्यान केन्द्रित करना है, जो एक मॉडल के रूप में अन्य बढ़ते हुए शहरों के लिए लाइट हाऊस का काम करें।

राज्य में अजमेर शहर को स्मार्ट सिटी मिशन के अन्तर्गत प्रथम चरण में शामिल किया गया था तथा इसके उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए केन्द्र सरकार से लेकर शहरी प्रशासन प्रयासरत है। शहर में इस मिशन के लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिये विगत वर्षों में अनेकों कार्य किये जा चुके हैं, जिनमें शहर का सौन्दर्यीकरण सबसे मुख्य है।

बुनियादी एवं गैर बुनियादी गतिविधियां :

समाज में मनुष्य जब क्रिया करता हैं तो उसके सामने अनेक विकल्प होते हैं उसके किसी एक विकल्प को स्वीकार करके क्रिया करने का आधार सामाजिक विकास ही होता हैं। इस दृष्टिकोण से मूल्य क्रिया का वह आधार हैं जो कि नैतिकता अथवा तर्क अथवा सौंदर्य–परक निर्णय के आधार पर लिया जाता हैं। मूल्यांकन की इस प्रक्रिया में भावना एवं समझ के आधार पर निहित हैं। भूगोलशास्त्री यह मानते हैं कि सामाजिक विकास संस्कृति व भौगोलिक परिवेश के द्वारा स्वीकृत होते हैं और वे संस्थात्मक प्रक्रिया के माध्यम से सामाजिक प्रक्रिया के अंग बन जाते हैं। अतः बुनियादी कारकों का चयन भौगोलिक एवं सांस्कृतिक आधार पर किया जाता हैं। फिर भी मनुष्य का व्यक्तित्व उसे एक ऐसी विशिष्टता प्रदान करता हैं कि वह अलग–अलग विकल्पों में से, जो कि संस्कृति के द्वारा स्वीकृत हैं, किसी एक विकल्प का चयन करता हैं। इस दृष्टिकोण से हालांकि व्यक्ति को विभिन्न विकल्पों में से किसी एक विकल्प को चयन करने की स्वतंत्रता है फिर भी विभिन्न विकल्प सांस्कृतिक व भू–दृश्यों के द्वारा निर्धारित होते हैं।

शिक्षण गतिविधियां :

शिक्षा का मानवीय साधनों के विकास में प्रमुख स्थान होता है शिक्षा एक साधन के साथ–साथ स्वयं में एक साध्य भी होती है, क्योंकि विकास का लक्ष्य लोगों को शिक्षित करना भी होता है। शिक्षा के विकास से अनेक लाभ प्राप्त होते है जैसे जन्मदर में गिरावट लाने में आसानी, शिशु मृत्यु दर में कमी, मानवीय दक्षता में वृद्धि से उत्पादन में वृद्धि, जीवन स्तर में वृद्धि एवं सामाजिक परिवर्तन जिससे सामाजिक कुरीतियों जैसे बाल विवाह, लड़के की इच्छा आदि को दूर करने में मदद मिलती है।

अजमेर शहर अंग्रजों के शासन काल से ही गुणवत्ता के दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण शैक्षणिक केन्द्र के रूप में प्रसिद्ध है। राज्य सरकार द्वारा स्थापित महर्षि दयानन्द सरस्वती विश्वविद्यालय, जे. एल. एन. आयुर्विज्ञान महाविद्यालय, राजकीय महाविद्यालय एवं अभियांत्रिक महाविद्यालय आदि अजमेर शहर के प्रमुख एवं महत्वपूर्ण शैक्षणिक संस्थान हैं।

सारणी सं. 2 : अध्ययन क्षेत्र में शैक्षणिक गतिविधियां– 2019

क्र. सं.	शैक्षणिक स्तर	विद्यालय	विद्यार्थी	शिक्षक
1	प्राथमिक विद्यालय	189	17213	675
2	उच्च प्राथमिक विद्यालय	264	45905	1795
3	माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक विद्यालय	245	76863	3721
योग		698	139981	6191

स्त्रोत : शिक्षा विभाग, अजमेर।

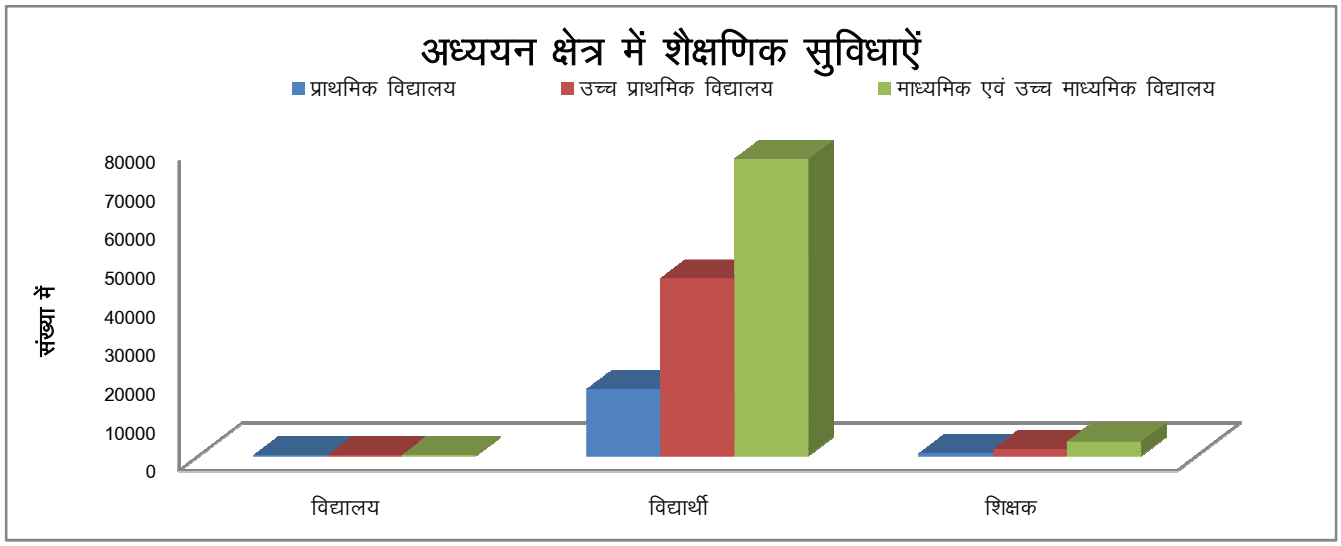

आरेख 2 : अध्ययन क्षेत्र में शैक्षणिक सुविधाऐं

वहीं दूसरी ओर निजी क्षेत्र में मुख्य रूप से भगवन्त विश्वविद्यालय, मेयो कॉलेज, ए. आई. टी. कॉलेज, मेयो गर्ल्स कॉलेज, सोफिया गर्ल्स कॉलेज, डी. ए. वी. कॉलेज, ग्लोबल प्रबंधन महाविद्यालय आदि कार्यरत हैं। साथ ही अजमेर शहर में कृषि अनुसंधान केन्द्र भी स्थापित किया गया है, जो वर्तमान में कार्यरत है।

शिक्षा के कई आयाम हैं जैसे प्राथमिक शिक्षा, माध्यमिक शिक्षा तथा उच्च शिक्षा। शिक्षा सामान्य प्रकार की एवं तकनीकी हो सकती है। अनेक शैक्षणिक कार्यक्रमों के तहत सीकर में शिक्षा के विस्तार पर सरकार ने ध्यान दिया है। यही वजह है कि सीकर शिक्षा के क्षेत्र में देश के उच्च शैक्षणिक विकास वाले जिलों में समाहित किया गया है। यहाँ ग्रामीण एवं नगरीय दोनों ही क्षेत्रों में शिक्षा का फैलाव हुआ है। यहाँ प्राथमिक स्कूल, माध्यमिक स्कूल, उच्च माध्यमिक स्कूल आदि सभी प्रकार की शिक्षण संस्थाऐं यहाँ स्थित है। नगरीय क्षेत्रों में कॉलेजों का विकास अधिक हो रहा है परन्तु प्राइवेट कॉलेजों का विकास बड़े–बड़े ग्रामों तक हो रहा है।

चिकित्सा गतिविधियां :

स्वस्थ व्यक्ति विकास का साधन व साध्य दोनों होता है। स्वस्थ नागरिक ही देश का विकास तेजी से बढ़ा सकते है और विकास का माप होता है। व्यक्तियों के स्वास्थ्य में सुधार होना चाहिए जो खानपान, शुद्ध पेयजल, आवास की सुविधाओं, पर्यावरण आदि तत्वों पर निर्भर करता है। इनका समुचित विकास होने से लोग स्वस्थ रह सकते है।

स्वास्थ्य सेवाओं में विभिन्न प्रकार की चिकित्सा सेवाएँ आती है,जो विशेषतया प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्रों व सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्रो के द्वारा लोगों को उपलब्ध की जाती है। उत्तम स्वास्थ्य सेवाओं से शिशु मृत्यु दर व सामान्य मृत्यु दर घटती है, जन्म दर कम की जा सकती है एवं औसत आयु ऊँची होती है। अजमेर शहर की स्वास्थ्य सेवाओं की महत्वपूर्ण प्राथमिकता माताओं की गर्भावस्था व उसके बाद पूर्ण देखभाल की होनी चाहिए। अजमेर शहर महिलाओं व बच्चों के स्वास्थ्य में लगातार सुधार की अति आवश्यकता है।

अजमेर की जवाहरलाल नेहरू चिकित्सालय लगभग 6.48 हैक्टेयर क्षेत्र में विस्तार लिए हुए है और यह अजमेर शहर का मुख्य चिकित्सालय है जिसमें 918 बैडो की सुविधा है। इसके साथ ही लोहागल में लगभग 16.19 हैक्टेयर क्षेत्र में महिला चिकित्सालय स्थापित है इसमें लगभग 300 बेडों की सुविधा उपलब्ध है। क्षय रोग पर नियंत्रण व उपचार के लिए कमला नेहरू चिकित्सालय भी शहर में अपनी सेवाऐं दे रहा है। शहर के आर्दश नगर में एक सैटेलाईट

चिकित्सालय व मदारकोट पर कस्तूरबा चिकित्सालय भी स्वास्थ्य हेतु शहर में आधारभूत सुविधाओं को उपलब्ध करवाते हैं।

सारणी सं. 3 : अध्ययन क्षेत्र में चिकित्सा सुविधाऐं

क्र. सं.	वर्ग	सामान्य चिकित्सा		आयुर्वेद चिकित्सा	
		बैड संख्या	चिकित्सक संख्या	बैड संख्या	चिकित्सक संख्या
1	जवाहरलाल नेहरू चिकित्सालय	918	659	–	–
2	राजकीय महिला चिकित्सालय	290	242	–	–
3	कमला नेहरू क्षय रोग चिकित्सालय	20	29	–	–
4	राजकीय सैटेलाईट चिकित्सालय	50	30	–	–
5	राजकीय औषधालय	72	97	–	–
6	आयुर्वेदिक राजकीय चिकित्सालय	–	–	75	49
7	आयुर्वेदिक राजकीय औषधालय	–	–	–	15
योग		1380	1057	75	64

स्त्रोत : मुख्य चिकित्सा अधिकारी, अजमेर शहर।

इनके अतिरिक्त शासकीय आयुर्वेद एवं यूनानी औषधालय, रेलवे चिकित्सालय तथा निजी क्षेत्र में मित्तल अस्पताल, मयाणी अस्पताल, शारदा नर्सिंग होम, होम्यापेथी का सेवा मन्दिर इत्यादि शहर में मुख्य रूप से अपनी सेवाऐं दे रहे हैं।

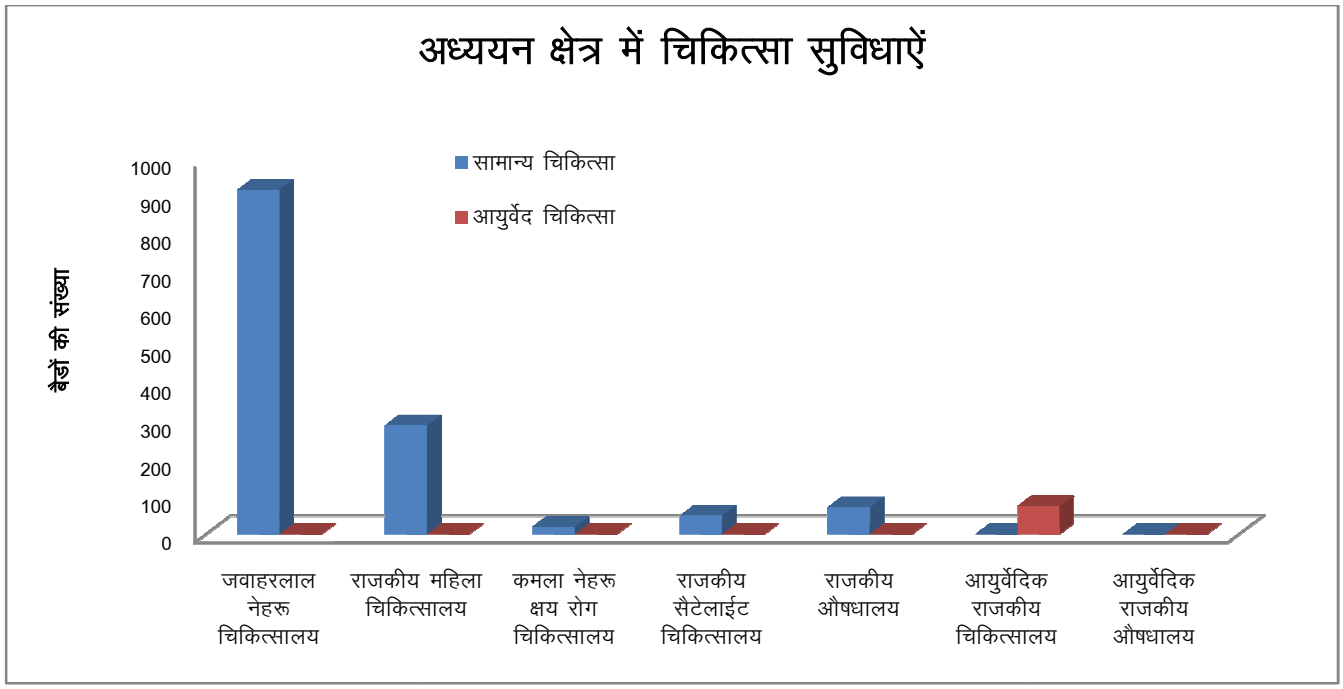

आरेख सं. 3 : अध्ययन क्षेत्र में चिकित्सा सुविधाऐं

अजमेर शहर में मनोरंजन के भी अनेक साधन उपलब्ध हैं, जिनमें से सिनेमा एक प्रमुख साधन है। अजमेर शहर में लगभग 6 सिनेमाघर लोगों के मनोरंजन हेतु उपलब्ध हैं। इनमें से 2 सिनेताघर मल्टीप्लेक्स हैं। इनके अतिरिक्त

अजमेर क्लब, जवाहर रंगमंच, सूचना केन्द्र में खुला रंगमंच निर्मित है जहां कि आमोद–प्रमोद की गतिविधियां होती रहती हैं। शहर में रेलवे द्वारा तीन क्लबों का संचालन भी किया जा रहा है। इनके अतिरिक्त अजमेर शहर में नगर परिषद् द्वारा सार्वजनिक पुस्तकालय भी संचालित किया जा रहा है, जिसमें गांधी भवन प्रमुख है। शहर के विभिन्न क्षेत्रों में नगर परिषद् अथवा स्ववित्त पोषित संस्थाओं द्वारा पुस्तकालय और वाचनालय कार्यरत हैं। शहर में बस स्टैण्ड़ के पास एक डाक बंगला, बजरंग गढ़ चौराहे के निकट सर्किट हाऊस, केन्द्रीय सार्वजनिक निर्माण विभाग के डाक बंगले के अलावा विभिन्न संस्थाओं के अलग–अलग डाक बंगले और विश्रान्ति गृह संचालित हैं।

साथ ही शहर में बड़ी धर्मशालाऐं यथा महेश धर्मशाला, श्रीराम धर्मशाला, लाहोटी धर्मशाला, लोढ़ा धर्मशाला, हिन्दू धर्मशाला इत्यादि मुख्य रूप से कार्यरत हैं। इनके अलावा अजमेर नगर परिषद् द्वारा विभिन्न स्थानों पर सामुदायिक भवनों का निर्माण करवाया गया है, जो शहर की आधारभूत संरचना को मजबूत करते हैं।

निष्कर्ष :

अजमेर शहर के पुराने क्षेत्र में गलियाँ व सड़कें कम चौड़ी एवं असमतल स्थिति में होने के कारण यातायात दबाव एवं परिवहन सम्बंधी समस्याऐं अति गम्भीर रूप से बनी रहती हैं। शहर के अधिक जनसंख्या वाले क्षेत्रों में सड़कें इतनी संकरी हैं कि उनमें एक व्यक्ति का आवागमन ही सम्भव है। गलियों में यातायात का अधिक दबाव होने के कारण यातायात प्रायः बाधित होता रहता है। शहर की मुख्य सड़कें भी जनसंख्या व वाहनों की वृद्धि की तुलना में अधिक चौड़ी नही हैं, इस कारण शहर की प्रमुख सड़कों पर भी यातायात दबाव अधिक बना रहता है। इन सड़कों पर दबाव अधिक ना बढ़े, इस हेतु राष्ट्रीय राजमार्ग संख्या 8 पर अजमेर–ब्यावर–नसीराबाद बाईपास का निर्माण किया गया है। अजमेर शहर के चारों ओर पहाड़ियां एवं असमतल भू–भाग के कारण सड़क की चौड़ाई कम है। शहर का बस स्टैण्ड़ मध्य में स्थित होने के कारण बसों का आवागमन शहर के मध्य से हसेकर होता है। शहर में यातायात दबाव को कम करने के लिए पुष्कर बाईपास का निर्माण किया गया है। शहर के मध्य भाग व केसरगंज क्षेत्र में धान मंड़ी कार्यरत होने से छोटे व बड़े वाहनों का आवागमन शहर के आंतरिक भाग से होता है, वहीं ऑटोमोबाइल्स की दुकानें होने के कारण भारी वाहन खड़े रहते हैं, यद्यपि ब्यावर रोड़ पर कृषि उपज मंड़ी का निर्माण हो चुका है तथा वहां अधिकांशतः अनाज का व्यापार शुरू हो चुका है, लेकिन ये गतिविधियां शहर में फैली होने के कारण भारी वाहनों का आवागमन शहर के अन्दर से ही होता है। शहर के बाहर ट्रांसपोर्ट नगर का निर्माण भी किया जा चुका है। शहर में पार्किंग की कोई उचित व्यवस्था नहीं है। गांधी भवन के सामने केवल 5 से 10 गाडियां खड़ी करने की जगह है, इनके अलावा वाहन सड़क पर ही खड़े किये जाते हैं। हाल ही में स्थानीय निकाय के द्वारा गांधी भवन चौराहे के पास रेलवे परिसर में एक पार्किंग स्थल तथा कचहरी रोड़ पर नाले का पार कर दूसरा पार्किंग स्थल विकसित किया गया है। इसके अलावा नगर की यातायात समस्या से निजात पाने के लिए नगर सुधार न्यास द्वारा पुराने राजस्थान लोक सेवा आयोग भवन से कचहरी रोड़ होते हुए, मार्टिनल ब्रिज तक एलीवेटेड रोड बनाये जाने के लिए तकनीकी सर्वेक्षण शुरू करा दिया गया है।

सन्दर्भ :

1. जिला गजेटियर, जिला अजमेर (2002)।
2. जिला सांख्यिकीय रूपरेखा, जिला अजमेर (2016)।
3. जनगणना रिपोर्ट, भारतीय जनगणना विभाग, 1991–2011, जिला अजमेर।
4. कार्यालय, अजमेर नगर निगम, अजमेर।
5. अजमेर विकास प्राधिकरण, अजमेर।
6. डॉ. भल्ला, एल.आर. (2003) : राजस्थान का भूगोल, कुलदीप पब्लिशिंग हाउस, जयपुर, पृ. 68।